प्रातः क्लास 2-1-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप समझाते हैं। बाप भी मात-पिता भी है। तुम गाते थे ना तुम मात-पिता हम बालकें तेरे— सभी पुकारते रहते हैं। किसको पुकारते हैं? परमपिता परमात्मा को। बाकी उनको समझ में नहीं आता है किकृपा से सुख घनेरे कौन सी मिलती हैं। और कब मिलती हैं। सुख घनेरे किसको कहा जाता है वह भी नहीं समझते। अभी तुम यहां सामने बैठे हो। जानते हो यहां कितने दुःख घनेरे हैं। यह है दुःखधाम। वह है सुखधाम। किसकी बुधि में नहीं आता कि हम 2। जन्म स्वर्ग में बहुत सुखी रहते हैं। तुमको भी पहले यह अनुभव नहीं था। अभी तुम समझते हो हम उस परमपिता परमात्मा को मात-पिता की के सामने बैठे हैं। जानते हो 2। जन्मों के लिये स्वर्ग की बादशाही प्राप्त करने लिये आये हैं। बाप को जान लिया और बाप द्वारासारी सृष्टि के चक्र को भी समझ लिया है। हम पहले सुख घनेरे मे थे। फिर दुःख मे आये हैं। यह भी नम्बरवार हरेक को बुधि रहता है। स्टुडन्ट्स को तो सदैव याद रहना चाहिए। परन्तु बाबा देखते हैं घाड़ी2 भूल जाते हैं। इसलिये फिर मुझा जाते हैं। छुईमुई स्टुडन्ट हो जाते हैं। माया वार कर लेती हैं। वह जो खुशी होनी चाहिए वह नहीं रहती हैं। नम्बरवार पद है ना। स्वर्ग में तो जाते हैं परन्तु वहां भी राजा से लेकर रंक तक रहते हैं। वह गरीब प्रजा वह साहुकार। स्वर्ग मे भी ऐसे है तो नर्क में भी हैं। ऊंच और नीचअभी तुम बच्चे जानते हो पुरुषार्थ करते हैं सुख घनेरे पाने लिये। इन (ल0ना0) को सभी से जास्ती सुख घनेरे है ना। मुख्य है पवित्रता की बात। पवित्रता के बिगर पीस प्राप्ती मिल नहीं सकता। इसमें चलन बहुत अच्छी चाहिए। मनुष्य की चलन सुधरती है पवित्रता से। पवित्र हैं तो उनको देवता कहा जाता है। तुम यहां आये हो ही देवता बनने लिये। वह देवतायें सदा सुखी थे। मनुष्य को तो सदा सुख हो न सके। सुख होता ही है देवताओं को। इन देवताओं के ही तुम पूजा करते थे ना। क्योंकि पवित्र थे। सारा मदार है पवित्रता पर। विघ्न भी इसमें ही पड़ती हैं। चाहते हैं दुनिया मे पीस हो। बाप कहेंगे सिवाय पवित्रता के शान्ति कब हो न सके। पहले2 मुख्य है ही पवित्रता की बात। पवित्रता से ही सुधरे हुये चलन होते हैं। पतित होने से तो और ही चलन बिगड़ती हैं। समझना चाहिए अभी हमको फिर से देवता बनना है। तो पवित्रता जरूर चाहिए। देवतायें पवित्र हैं। तब तो अपवित्र मनुष्य उन्हों के आगे माथा टेकते हैं। मुख्य बात है पवित्रता की। पुकारते भी ऐसे हैं हे पतित-पावन आकर पावन बनाओ। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है इन पर जीत पहनो। इन पर जीत पाने से तुम पवित्र बनेंगे। तुम जब पवित्र सतोप्रधान थे तो शान्ति भी थी सुख भी था। अभी तुम बच्चों को याद आई है ना। कल की बात है। तुम पवित्र थे तो अथाह सुख सम्पति, शान्ति सभी कुछ था। अभी फिर तुमको यह बनना है। इसमें पहले मुख्य बात है सम्पूर्ण निर्विकारी बनना। यह तो गायन है यह है ज्ञान यज्ञ। इसमें विघ्न तो जरूर पड़ेंगे। पवित्रता के ऊपर ही तंग करते हैं। आसुरी सम्प्रदाय और दैवी सम्प्रदाय भी गाये हुये हैं। तुम्हारी बुधि में है सतयुग में यह देवतायें थे। भल सूरते तो मनुष्य की हैं परन्तु उन्हों को देवता कहा ता हैं। वहां है सम्पूर्ण सतोप्रधान। हर चीज परफेक्ट होती है। बाप परफेक्ट है तो बच्चों को भी परफेक्ट बनाते हैं। योगबल से तुम कितने पवित्र ब्युटीफुल बनते हो। यह मुसाफिर तो सबर गोरा है। जो तुमको भी सांवरा से गोरा बनाते हैं। तुम जानते हो हम हर 5000 वर्ष बाद सांवरे बनते हैं। फिर बाप आकर गोरा बनाते हैं। वहां तो है ही गोरे। नेचरल ब्युटी होती है। सुन्दर बनाने की दरकार ही नहीं रहती। सतोप्रधान होते ही हैं सुन्दर। वही फिर तमोप्रधान होने से काले हो पड़ते हैं नाम ही है श्याम और सुन्दर। कृष्ण को श्याम और सुन्दर कहते हैं। उनका अर्थ कब कोई बता न सकेसिवाय बाप के। भगवान बाप जो बात सुनाते हैं वह और कब कोई मनुष्य सुना न सकेंगे। चित्रों में स्वदर्शनचक्रधारी देवताओं को बना दिया है। बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चों स्वदर्शन चक्र की तो देवताओं को दरकार ही नहीं। वह क्या करेंगे शंख आदि। स्वदर्शनचक्रधारी तुम ब्राह्मण बच्चे हो। शंख ध्वनि भी तुमको करनी है। तुम जानते हो अभी विश्व में शान्ति कैसे स्थापन हो रही—

है। साथ में चलन भी बड़ी अच्छी चाहिए। भक्ति मार्ग में भी तुम देवताओं के आगे अपनी चलन का वर्णन करते हो। परन्तु देवतायें कोई तुम्हारे चलन को सुधारते नहीं हैं। सुधारने वाला और है। वह शिव बाबा तो है निराकार। उनके आगे ऐसे नहीं कहेंगे आप सर्वगुण सम्पन्न हो.. शिव की महिमा हो अलग हैं। देवताओं की महिमा गाते हैं परन्तु हम ऐसे कैसे बनें। आत्मा ही पवित्र और अपवित्र बनती है ना। अभी तुम्हारी आत्मा पवित्र बन रही है। जब आत्मा सम्पूर्ण पावन बन जावेगी तो फिर यह पतित शरीर न रहेगा। फिर जाकर पावन शरीर लेंगे। यहां तो पावन शरीर हो न सके। पावन शरीर हो तब जब प्रकृति भी सतोप्रधान हो। नई दुनिया हर चीज सतोप्रधान होती है। 5तत्व भी सतोप्रधान बन जाते हैं। तत्व सभी तुम्हारे हुकुम में रहते हैं। दुःख की बात नहीं होती। यहां तो 5तत्व भी तमोप्रधान होने कारण कितने उपद्रव आदि होते रहते हैं। तीर्थ यात्रा पर जाते हैं कोई एक्सीडेन्ट हुआ, मर पड़ते। जल, पृथ्वी आदि कितना नुकसान करते हैं। यह सभी 5तत्व भी नुकसान करते रहते हैं। तुम्हारे विनाश में मदद करते रहते हैं। अचानक बाढ़ आ जाती। तूफान आते। यह है नैचरल ईश्वरीय आपदायें। वह बम्स आदि जो बनाते हैं वह सभी ड्रामा में नूंध है उनको ईश्वरीआपदायें नहीं कहेंगे। वह तो मनुष्यों की बनाई हुई है। अर्थ क्वेक आदि मनुष्यों की बनाई हुई नहीं हैं। यह आपदायें सभी आपस में मिलती हैं तब पृथ्वी से हलकाई होती है। तुम जानते हो कैसे बाबा हमको हल्का बनाकर और ले जाते हैं नई दुनिया में। हजाम लोग बाल उतारते हैं तो माथा हलका हो जाता है। बाप भी एकदम हल्का कर देते हैं। सन्यासियों मिस्ल गुंजा नहीं करते। हल्का कर देते हैं। माथा हल्का होने से फुर्सत हो जाती है। तुमको बाप बिल्कुल हल्का कर देते हैं। सभी दुःख दूर हो जाते। अभी तुम सभी का माथा बहुत भारी हो गया है। फिर सभी हल्के शान्ति सुखी हो जावेंगे। जो जिस धर्म वाले हैं सभी को खुशी होनी चाहिए। बाप आया हुआ है सभी की सदगति करने। तुमको पैगाम देना है बाप आये हैं एक आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करने। जब पूरी स्थापना हो जाती है तब सभी धर्मों का विनाश हो जाता है। आगे तुम्हारी बुद्धि में यह ख्याल भी नहीं था। अभी समझते हो। गायन भी है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। अभी बाकी अनेक धर्म विनाश विनाश। यह कर्तव्य एक बाप ही करते हैं। दूसरा कोई कर न सके। सिवाय एक शिव बाबा के। ऐसा अलौकिक जन्म और अलौकिक कर्तव्य हो न सके। बाप है ऊंच ते ऊंच उनका कर्तव्य भी बहुत ऊंच है। करन करावनहार है ना। तुम नालेज सुनाते हो। जानते हो बाबा आया हुआ है। इस सृष्टि भर से पापात्माओं को बोझ उतारने आये हैं। यह तो गायन भी है बाप आते हैं एक धर्म की स्थापना अनेक धर्मों का विनाश करने। अभी तुमको कितना ऊंच महात्मा बना रहे हैं। महात्मा देवता बिगर कोई होता ही नहीं। यहां तो अनेकों को महात्मा कहते रहते हैं। वास्तव में महात्मा नाम है संग। नर्क में फिर महात्मा कहां से आया। मनुष्यों को कुछ भी पता ही नहीं हैं। महात्मा कहा जाता है महान आत्मा को। रामराज्य कहा ही जाता है स्वर्ग को। वहां रावण राज्य ही नहीं। इसलिये इसको कहा जाता है सम्पूर्णनिर्विकारी। जितना सम्पूर्ण बनेंगे उतना ही बहुत समय सुख में रहेंगे। अपूर्ण तो इतना सुख पा न सकेंगे। कुल में भी कोई सम्पूर्ण कोई अपूर्ण होते हैं। फर्क दिखाई पड़ता हैं। डाक्टर तो डाक्टर ही है ना परन्तु की पे देखो बहुत कम। कोई की जास्ती। वैसे ही देवता तो देवता ही हैं परन्तु मर्तबे का फर्क तो पड़ जाता है। बाप आकर तुमको ऊंच पढ़ाते हैं। कृष्ण को कब भगवान कह नहीं सकते हैं। कृष्ण को ही कहते हैं श्यामसुन्दर। सांवरा भी कृष्ण दिखाते हैं। कृष्ण सांवरा थोड़ेही होता है। नाम रूप तो बदल जाता है ना। सो भी आत्मा सांवरी बनती है। भिन्न नाम रूप देश काल। अभी तुमको समझाया जाता है। तुम समझते हो हम बराबर शुरू से लेकर कैसे पार्ट में आये हैं। पहले देवता थे। फिर देवता से असुर बने हैं। बाप ने 84 जन्मों का राज भी बताया है। जिसको और कोई को पता नहीं हैं। बाप ही आकर सभी राज समझाते हैं। बाप कहते हैं मेरे लाडले बच्चे तुम हमारे साथ घर में रहते थे। तुम भाई2 थे ना। अ सभी आत्मायें थे। शरीर नहीं था। बाप था और तुम बच्चे भाई2 थे। और कोई सम्बन्ध नहीं था। बाप तो पुनर्जन्म में आते हैं। वहां तो सभी आत्मायें निर्लेप में रहते हैं। इसका नाम==

2-11-68

कोई सम्बन्ध नहीं था। बाप तो पुनर्जन्म में आते नहीं। वह तो ड्रामाअनुसार रिजर्व में रहते हैं। उनका पार्ट ही ऐसा हैं। तुमने कितना समय पुकारा है वह भी बाप ने बताया है। ऐसे नहीं द्वापर से पुकारना शुरू किया है। नहीं। बहुत समय के बाद तुमने पुकारना शुरू किया है। तुमको तो बाप बहुत ही सुखी बनाते हैं। अथाह सुख का वरसा बाप दे रहे हैं। तुम भी कहते हो बाबा आप के पास कल्प2 अनेक बार आये हैं। यह चक्र चलता ही रहता है। हर 5000वर्ष बाद बाबा आप से हम मिलते हैं। और यह वरसा देते हैं। जो भी सभी देहधारी है सभी सभी स्टुडन्टस हैं। पढ़ाने वाला है विदेही। यह देह उनकी नहीं हैं। खुद विदेही हैं। यहां आकर देह धारण करते हैं। देह बिगर बच्चों को पढ़ावे कैसे। सभी रूहों का वह बाप है। भक्ति मार्ग में सभी उनको पुकारते हैं। बरोबर रुद्र माला सिमरते भी हैं। ऊपर में है फूल। और=युगल मेरू। वह तो एक जैसे ही है। फूल को क्यों नमस्कार करते हैं। यह भी अभी तुमको पता पड़ा है कि माला कैसे फेरते हैं। देवताओं की फेरते हैं या तुम्हारी फेरते हैं? माला देवताओं की है या तुम्हारी? देवताओं की नहीं कहेंगे। यह ब्राह्मण ही हैं जिनको बाप बैठ पढ़ाते हैं। ब्राह्मण बन फिर देवता बन जाते हैं। अभी पढ़ते हो फिर वहां जाकर देवता पद पाते हो। माला तुम ब्राह्मणों की है तो बाप द्वारा पढ़ कर मेहनत कर फिर देवता बनते हो। बलिहारी है तुम्हारे पढ़ाने वाले की। बाप ने बच्चों की कितनी सेवा की है। वहां तो कोई बाप को याद भी नहीं करते हैं। भक्ति मार्ग में तुम माला फेरते थे। अभी वह फूल आकर तुमको भी फूल बनाते हैं। अर्थात अपने माला का दाना बनाते हैं। तुम गुल2 बनते हो ना। आत्मा का ज्ञान भी अभी तुमको मिलता हैं। सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान तुम्हारी बुधि में है। तुम्हारी ही महिमा है। तुम ब्राह्मण बैठ आप समान ब्राह्मण बनाकर फिर स्वर्गवासी देवी देवता बनाते हो। देवतायें तो स्वर्ग में रहते हैं। तुम जब देवता बन जाते हो वहां तुमको पास्ट परजेन्ट फ्युचर के नालेज नहीं होंगी। अभी तुम ब्राह्मण बच्चों को पास्ट परजेन्ट फ्युचर का ज्ञान मिलता है। और कोई को यह मिलता ही नहीं हैं। तुम बहुत बहुत भाग्यशाली हो। परन्तु माया फिर भी भूला देती हैं। तुमको कोई यह बाबा नहीं पढ़ाते हैं। यह तो मनुष्य हैं। यह भी पढ़ रहे हैं। यह तो सभी से लास्ट में था। सभी से नम्बरवन पतित वही फिर नम्बरवन पावन बनते हैं। पतित दुनिया में सभी पतित मनुष्य ही हैं। पवित्र दुनिया में होते ही हैं सभी पवित्र। कितना सुखी होते हैं। एमआबजेक्ट सामने खड़ी है। बाप कितना तुमको ऊंच बनाते हैं। आयुष्मान भव, पुत्रवान भव। यहभी सभी ड्रामा में नूंध हैं। बाप कहते हैं मैं अगर बैठ आशीर्वाद दूं तो फिर सभी को दता रहूं। कोई को बच्चा नहीं होता है तो भी झगड़ा चल पड़ता है। कहेंगे पवित्र भल बनना एक बच्चा तो दो। मित्र सम्बन्धी भी कहते हैं अपना नसल तो छोड़ कर जाओ। बाप कहते हैं यह बिचारे टिण्डन का का नसल क्या करेंगे। बच्चों का हाल तो देखो क्या बन जाते हैं। यह है ही तमोप्रधान दुनिया। श्री कृष्ण स्वर्ग का प्रिन्स। उनपर भी गालियों का कितनावरसा कर दिया है। बाप भी कहते हैं तुमने कितनी ग्लानी की हैं। सो भी अपनी और मेरी। यह भी ड्रामा में खेल हैं। पूज्य से पुजारी बनते हो पुजारी से बनने से आसुरी सम्प्रदाय बन जाते हैं। अभी है ही कलियुग। सभी घोर अंधियारे में हैं। तुम्हारे लिये है पुरुषोत्तम संगम युग। अभी तुम रोशनी में हो। वह सभी है अंधियारे में। तुम्हारी बुधि में अभी सारा फर्क है। तुम जानते हो अभी हम नई दुनिया में जा रहे हैं। यह पुरानी दुनिया है। यह तो कोई भी कहेंगे तमोप्रधान दुनिया है। इनको कहते हैं विषय वैतरणी नदी। वेश्यालय। हम शिवालय के वासी थे। हाय हाय! रावण तुमने हमको वेश्यालय में डाल दिया। अभी तुमको मालूम पड़ा है यह खेल कैसा बना हुआ है। आधा कल्प हम शिवालय में आधा कल्प हम वेश्यालय में रहते हैं। बाप कहते हैं तुम वेश्यालय में गिरते हो। तब भी तुम्हारे पास धन अथाह रहता है। लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं। यह है ही 5000वर्ष का ड्रामा। नई और पुरानी दुनिया की आयु भी जरूर चाहिएना। मनुष्यों ने तो एकदम जैसे तवाई बना दिया है। शास्त्रों में क्या2 ब

2-11-68

लिख कर दी है। नाम रख दिया है व्यास भगवान ने बनाया। बहुत कहानियां बना दी है। कितने पुस्तकें हैं। वहां तो कोई पुस्तक की दरकार ही नहीं। न वेद-शास्त्र उपनिषद आदि पढ़ने की ही दरकार हैं। इनसे कोई फायदा नहीं। यह भक्ति मार्ग के शास्त्र पढ़ते2 तुमने दुर्गति को पा लिया है। बाप कहते हैं मुझे भी पढ़ने की दरकार नहीं। मैं आता हूं आकर सभी को सदगति कर देता हूं। यह तुम्हारी पढ़ाई कितनी ऊंच हैं। स्कूल में भी बच्चों क्या पढ़ाना है। भगवान पढ़ाते हैं तो फिर असुर से क्यों पढ़नी चाहिए। यहां से ही यह पढ़ाना शुरू कर दो। इन बच्चों के लिये तो और ही सहज हो जावेगा। छोटे2 बच्चे बड़ों का भी नाम निकालेंगे। सभी वन्डर खावेंगे यह तो भगवान के बच्चे हैं जो सदगति का रास्ता बताते हैं। इसमें हिम्मत चाहिए। यह है ईश्वरीय पढ़ाई। वह है आसुरीपढ़ाई। पढ़ते2 आधा में ही मर जाते हैं फिर भी शिव बाबा की याद में शरीर छोड़ेंगे। हो सकता है आयु भी बढ़ जाये। बूढ़ियों2 को पढ़ाते हैं। तो छोटे बच्चों को क्यों नहीं पढ़ावेंगे। यह तो फूल है। यह तो अच्छा पढ़ सकते हैं। बच्चों का भी हक हैं। इन में भी तो आत्मा है ना। पढ़ना तो आत्मा को है। तुम यही पढ़ाते रहो। घर घर में मां बाप बैठ बच्चों को यही सिखाते रहे। तो उन्हों के लक्षण भी अच्छे हो जावेंगे। सभी के नहीं होंगे। कोई2 तो ऐसे बच्चे होते हैं जो नाक में ही दम कर देते हैं। माया घेर लेती है तो बात मत पूछो। सम्भालना ही मुश्किल हो जाता है। अन्यान्य बच्चे जानते हैं कैसे2 नाक में दम करने वाले हैं। फिर कह देते हैं ड्रामा। ड्रामा के प्लैनअनुसार शिव बाबा मिला है। उनकी डायरेक्शन पर चलना है। मनुष्य तो कह देते हैं जो नसीब में होगा। परन्तु नहीं हर बात में पुरुषार्थ करना पड़ता हैं। पुरुषार्थ बिगर प्रारब्ध कैसे मिलेगी। जो अच्छा पुरुषार्थ करते हैं वह ऊंच पद पाते हैं। कम पुरुषार्थ करने वाले तो कम पद ही पावेंगे। तुमको अभी पुरुषार्थ कराने वाला बेहद का बाप पिता हैं। वह कहते हैं तुमने मुझे बुलाया है ना हे पतित-पावन बाबा आकर हमको पावन बनाओ तो अभी आया हूं ना। फिर पावनबन जाते हो पावन दुनिया में। वहां तो फिर निमंत्रणभी नहीं देते हो बाबा आप पावन दुनिया में भी आओ। सिर्फ पतित दुनिया में बुलाते हो। वह तुमको पावन बनाकर विश्व का मालिक बना देते हैं फिर तो पूछते भी नहीं हो। यह खेल बड़ा ही वन्डरफुल है। यह भी जानते हो शिव बाबा कल्प2आते हैं, इन द्वारा तुमको बैठ पढ़ाते हैं। भगवानुवाच मैं तुमको डबलसिरताज बनाता हूं। यह पुरानी दुनिया खत्म हो जावेगी। कलियुग अन्त में तो यह देवतायें हैं ही नहीं। सतयुग आदि में हैं। तो वह कहां से आये? किसने बनाया? अभी तुम कैसे बन रहे हो यह भी समझ मिली हैं। फिर औरों को भी समझाना है। बहुतों का कल्याण करेंगे तो उन्हों की आशीर्वाद भी मिलेंगी। जितना सतोप्रधान बनने की पुरुषार्थ करेंगे तो खुशी भी बढ़ेगी। नम्बरवार तो होते ही हैं। सभी तो सतोप्रधान तक नहीं पहुंचेंगे। हिसाब किताब सारा समझाया जाता हैं। इस समय सभी रावण के जेल में फंसे हुये हैं। कृष्ण की आत्मा भी इस समय रावण की जेल में थी ना। सभी रावण के कैद में हैं। बाप ने आकर अब निकाला है। वहां यह जंजीर आदि होते ही नहीं। तो बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। बाप कहते हैं मैं हूं ही गरीब निवाज। गरीबों के पास ही आना होता है। जो बिल्कुल साहुकार थे वही बिल्कुल गरीब बन गये हैं। तो उन पर तरस पड़ता है। क्या थे, कैसे दिवाला मार दिया। फिर बाप कितना ऊंच बनाते हैं। अभी पुरुषार्थ करना पड़े। बाप को याद करो। कहते हैं मैं ही पतित-पावन हूं। देहधारी तो पतित-पावन हो न सके। देवताओं को भी पतित-पावन कह न सके। अभी तुमको मालूम पड़ा है। तुमने ईश्वर का भी अन्त पा लिया है। भक्ति मार्ग में तो कहते हैं वह बेअन्त हैं। तुम्हारी मत मत तुम्हीं जानो। बाप ही आकर श्रीमत देते हैं। बाप खुद ने मैं अपना सारा अन्त देता हूं। अभी तुम सभी कुछ जान गये हो। तुम जानते हो हम आत्मायें बाबा के साथ घर में रहनेहैं फिर यहां आकर अपना अपना पार्ट बजाने आये हैं। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुड़ मार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।